8

• कवितावली (उत्तरकांड से)
• लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप

–गोस्वामी तुलसीदास

कवि परिचय

जीवन परिचय–गोस्वामी तुलसीदास का जन्म बाँदा जिले के राजापुर गाँव में सन 1532 में हुआ था। कुछ लोग इनका जन्म-स्थान सोरों मानते हैं। इनका बचपन कष्ट में बीता। बचपन में ही इन्हें माता-पिता का वियोग सहना पड़ा। गुरु नरहरिदास की कृपा से इनको रामभक्ति का मार्ग मिला। इनका विवाह रत्नावली नामक युवती से हुआ। कहते हैं कि रत्नावली की फटकार से ही वे वैरागी बनकर रामभक्ति में लीन हो गए थे। विरक्त होकर ये काशी, चित्रकूट, अयोध्या आदि तीर्थों पर भ्रमण करते रहे। इनका निधन काशी में सन 1623 में हुआ।

रचनाएँ–गोस्वामी तुलसीदास की रचनाएँ निम्नलिखित हैं–
रामचरितमानस, कवितावली, रामलला नहछू, गीतावली, दोहावली, विनयपत्रिका, रामाज्ञा-प्रश्न, कृष्ण गीतावली, पार्वती-मंगल, जानकी-मंगल, हनुमान बाहुक, वैराग्य संदीपनी। इनमें से 'रामचरितमानस' एक महाकाव्य है। 'कवितावली' में रामकथा कवित्त व सवैया छंदों में रचित है। 'विनयपत्रिका' में स्तुति के गेय पद हैं।

काव्यगत विशेषताएँ–गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के सर्वोपरि कवि हैं। ये लोकमंगल की साधना के कवि के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यह तथ्य न सिर्फ़ उनकी काव्य-संवेदना की दृष्टि से, वरन काव्यभाषा के घटकों की दृष्टि से भी सत्य है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही है कि शास्त्रीय भाषा (संस्कृत) में सर्जन-क्षमता होने के बावजूद इन्होंने लोकभाषा (अवधी व ब्रजभाषा) को साहित्य की रचना का माध्यम बनाया।

तुलसीदास में जीवन व जगत की व्यापक अनुभूति और मार्मिक प्रसंगों की अचूक समझ है। यह विशेषता उन्हें महाकवि बनाती है। 'रामचरितमानस' में प्रकृति व जीवन के विविध भावपूर्ण चित्र हैं, जिसके कारण यह हिंदी का अद्‌वितीय महाकाव्य बनकर उभरा है। इसकी लोकप्रियता का कारण लोक-संवेदना और समाज की नैतिक बनावट की समझ है। इनके सीता-राम ईश्वर की अपेक्षा तुलसी के देशकाल के आदर्शों के अनुरूप मानवीय धरातल पर पुनः सृष्ट चरित्र हैं।

भाषा-शैली–गोस्वामी तुलसीदास अपने समय में हिंदी-क्षेत्र में प्रचलित सारे भावात्मक तथा काव्यभाषायी तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनमें भाव-विचार, काव्यरूप, छंद तथा काव्यभाषा की बहुल समृद्धि मिलती है। ये अवधी तथा ब्रजभाषा की संस्कृति कथाओं में सीताराम और राधाकृष्ण की कथाओं को साधिकार अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाते हैं। उपमा अलंकार के क्षेत्र में जो प्रयोग-वैशिष्ट्य कालिदास की पहचान है, वही पहचान सांगरूपक के क्षेत्र में तुलसीदास की है।

कविताओं का प्रतिपाद्य एवं सार

(क) कवितावली (उत्तरकांड से)

प्रतिपाद्य–कवित्त में कवि ने बताया है कि संसार के अच्छे-बुरे समस्त लीला-प्रपंचों का आधार 'पेट की आग' का दारुण व गहन यथार्थ है, जिसका समाधान वे राम-रूपी घनश्याम के कृपा-जल में देखते हैं। उनकी रामभक्ति पेट की आग बुझाने वाली यानी जीवन के यथार्थ संकटों का समाधान करने वाली है, साथ ही जीवन-बाह्य आध्यात्मिक मुक्ति देने वाली भी है।

सार–कवित्त में कवि ने पेट की आग को सबसे बड़ा बताया है। मनुष्य सारे काम इसी आग को बुझाने के उद्देश्य से करते हैं चाहे वह व्यापार, खेती, नौकरी, नाच-गाना, चोरी, गुप्तचरी, सेवा-टहल, गुणगान, शिकार करना या जंगलों में घूमना हो। इस पेट की आग को बुझाने के लिए लोग अपनी संतानों तक को बेचने के लिए विवश हो जाते हैं। यह पेट की आग समुद्र की बड़वानल से भी बड़ी है। अब केवल रामरूपी घनश्याम ही इस आग को बुझा सकते हैं।

पहले सवैये में कवि अकाल की स्थिति का चित्रण करता है। इस समय किसान खेती नहीं कर सकता, भिखारी को भीख नहीं मिलती, व्यापारी व्यापार नहीं कर पाता तथा नौकरी की चाह रखने वालों को नौकरी नहीं मिलती। लोगों के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे विवश हैं। वेद-पुराणों में कही और दुनिया की देखी बातों से अब यही प्रतीत होता है कि अब तो भगवान राम की कृपा से ही कुशल होगी। वह राम से प्रार्थना करते हैं कि अब आप ही इस दरिद्रता रूपी रावण का विनाश कर सकते हैं।

दूसरे सवैये में कवि ने भक्त की गहनता और सघनता में उपजे भक्त-हृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण किया है। वे कहते हैं कि चाहे कोई मुझे धूर्त कहे, अवधूत या जोगी कहे, कोई राजपूत या जुलाहा कहे, किंतु मैं किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करने वाला और न किसी की जाति बिगाड़ने वाला हूँ। मैं तो केवल अपने प्रभु राम का गुलाम हूँ। जिसे जो अच्छा लगे, वही कहे। मैं माँगकर खा सकता हूँ तथा मस्जिद में सो सकता हूँ, किंतु मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। मैं तो सब प्रकार से भगवान राम को समर्पित हूँ।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कवितावली

1. *किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,*
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।। (पृष्ठ–48)

[*CBSE Sample Paper, 2013; (Outside) 2011 (C)*]

शब्दार्थ–*किसबी*—धंधा। *कुल*—परिवार। *बनिक*—व्यापारी। *भाट*—चारण, प्रशंसा करने वाला। *चाकर*—घरेलू नौकर। *चपल*—चंचल। *चार*—गुप्तचर, दूत। *चेटकी*—बाजीगर। *गुन गढ़त*—विभिन्न कलाएँ व विधाएँ सीखना। *अटत*—घूमता। *अखेटकी*—शिकार करना। *गहन गन*—घना जंगल। *अहन*—दिन। *करम*—कार्य। *अधरम*—पाप। *बुझाइ*—बुझाना, शांत करना। *घनश्याम*—काला बादल। *बड़वागितें*—समुद्र की आग से। *आगि पेट की*—भूख।

प्रसंग–प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**कवितावली**' के '**उत्तरकांड**' से उद्धृत है। इसके रचयिता **तुलसीदास** हैं। इस कवित्त में कवि ने तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक दुरावस्था का यथार्थपरक चित्रण किया है।

व्याख्या–तुलसीदास कहते हैं कि इस संसार में मजदूर, किसान-वर्ग, व्यापारी, भिखारी, चारण, नौकर, चंचल नट, चोर, दूत, बाजीगर आदि पेट भरने के लिए अनेक काम करते हैं। कोई पढ़ता है, कोई अनेक तरह की कलाएँ सीखता है, कोई पर्वत पर चढ़ता है तो कोई दिन भर गहन जंगल में शिकार की खोज में भटकता है। पेट भरने के लिए लोग छोटे-बड़े कार्य करते हैं तथा धर्म-अधर्म का विचार नहीं करते। पेट के लिए वे अपने बेटा-बेटी को भी बेचने को विवश हैं। तुलसीदास कहते हैं कि अब ऐसी आग भगवान राम रूपी बादल से ही बुझ सकती है, क्योंकि पेट की आग तो समुद्र की आग से भी भयंकर है।

विशेष– (*i*) समाज में भूख की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है।
(*ii*) कवित्त छंद है।
(*iii*) तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग है।
(*iv*) ब्रजभाषा लालित्य है।
(*v*) 'राम घनस्याम' में रूपक अलंकार तथा 'आगि बड़वागितें...पेट की' में व्यतिरेक अलंकार है।
(*vi*) निम्नलिखित में अनुप्रास अलंकार की छटा है–
'किसबी, किसान-कुल', 'भिखारी, भाट', 'चाकर, चपल', 'चोर, चार, चेटकी', 'गुन, गढ़त', 'गहन-गन', 'अहन अखेटकी', 'बेचत बेटा-बेटकी', 'बड़वागितें बड़ी'
(*vii*) अभिधा शब्द-शक्ति है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न **(क)** *पेट भरने के लिए लोग क्या-क्या अनैतिक कार्य करते हैं?*

(ख) *कवि के अनुसार, पेट की आग कौन बुझा सकता है? यह आग कैसी है?*

(ग) *उन कर्मों का उल्लेख कीजिए, जिन्हें लोग पेट की आग बुझाने के लिए करते हैं।*

उत्तर (क) पेट भरने के लिए लोग धर्म-अधर्म व ऊँचे-नीचे सभी प्रकार के कार्य करते हैं। विवशता के कारण वे अपनी संतानों को भी बेच देते हैं।

(ख) कवि के अनुसार, पेट की आग को रामरूपी घनश्याम ही बुझा सकते हैं। यह आग समुद्र की आग से भी भयंकर है।

(ग) कुछ लोग पेट की आग बुझाने के लिए पढ़ते हैं तो कुछ अनेक तरह की कलाएँ सीखते हैं। कोई पर्वत पर चढ़ता है तो कोई घने जंगल में शिकार के पीछे भागता है। इस तरह वे अनेक छोटे-बड़े काम करते हैं।

2. *खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,*
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी॥ (पृष्ठ-48)

[*CBSE (Outside), 2011 (C)*]

शब्दार्थ– ***बलि***—दान-दक्षिणा। ***बनिक***—व्यापारी। ***बनिज***—व्यापार। ***चाकर***—घरेलू नौकर। ***चाकरी***—नौकरी। ***जीविका बिहीन***—रोज़गार से रहित। ***सीद्यमान***—दुखी। ***सोच***—चिंता। ***बस***—वश में। ***एक एकन सों***—आपस में। ***का करी***—क्या करें। ***बेदहूँ***—वेद। ***पुरान***—पुराण। ***लोकहूँ***—लोक में भी। ***बिलोकिअत***—देखते हैं। ***साँकरे***—संकट। ***रावरें***—आपने। ***दारिद***—गरीबी। ***दसानन***—रावण। ***दबाई***—दबाया। ***दुनी***—संसार। ***दीनबंधु***—दुखियों पर कृपा करने वाला। ***दुरित***—पाप। ***दहन***—जलाने वाला, नाश करने वाला। ***हहा करी***—दुखी हुआ।

प्रसंग– प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**कवितावली**' के '**उत्तरकांड**' से उद्धृत है। इसके रचयिता **तुलसीदास** हैं। इस कवित्त में कवि ने तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक दुरावस्था का यथार्थपरक चित्रण किया है।

व्याख्या– तुलसीदास कहते हैं कि अकाल की भयानक स्थिति है। इस समय किसानों की खेती नष्ट हो गई है। उन्हें खेती से कुछ नहीं मिल पा रहा है। कोई भीख माँगकर निर्वाह करना चाहे तो भीख भी नहीं मिलती। कोई बलि का भोजन भी नहीं देता। व्यापारी को व्यापार का साधन नहीं मिलता। नौकर को नौकरी नहीं मिलती। इस प्रकार चारों तरफ बेरोज़गारी है। आजीविका के साधन न रहने से लोग दुखी हैं तथा चिंता में डूबे हैं। वे एक-दूसरे से पूछते हैं—कहाँ जाएँ? क्या करें? वेदों-पुराणों में ऐसा कहा गया है और लोक में ऐसा देखा गया है कि जब-जब भी संकट उपस्थित हुआ, तब-तब राम ने सब पर कृपा की है। हे दीनबंधु! इस समय दरिद्रतारूपी रावण ने समूचे संसार को त्रस्त कर रखा है अर्थात सभी गरीबी से पीड़ित हैं। आप तो पापों का नाश करने वाले हो। चारों तरफ हाय-हाय मची हुई है।

विशेष– (*i*) तत्कालीन समाज की बेरोज़गारी व अकाल की भयावह स्थिति का चित्रण है।

(*ii*) तुलसी की रामभक्ति प्रकट हुई है।

(*iii*) ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग है।

(*iv*) 'दारिद-दसानन' व 'दुरित दहन' में रूपक अलंकार है।

(*v*) कवित्त छंद है।

(*vi*) तत्सम शब्दावली की प्रधानता है।

(*vii*) निम्नलिखित में अनुप्रास अलंकार की छटा है–
'किसान को', 'सीद्यमान सोच', 'एक एकन', 'का करी', 'साँकरे सबै', 'राम-रावरें', 'कृपा करी', 'दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु', 'दुरित-दहन देखि'।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न **(क)** *कवि ने समाज के किन-किन वर्गों के बारे में बताया है?*

(ख) *वेदों व पुराणों में क्या कहा गया है?*

(ग) *तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना किससे की है तथा क्यों?*

उत्तर (क) कवि ने किसान, भिखारी, व्यापारी, नौकरी करने वाले आदि वर्गों के बारे में बताया है कि ये सब बेरोज़गारी से परेशान हैं।

(ख) वेदों और पुराणों में कहा गया है कि जब-जब संकट आता है तब-तब प्रभु राम सभी पर कृपा करते हैं तथा सबका कष्ट दूर करते हैं।

(ग) तुलसीदास ने दरिद्रता की तुलना रावण से की है। दरिद्रतारूपी रावण ने पूरी दुनिया को दबोच लिया है तथा इसके कारण पाप बढ़ रहे हैं।

3. *धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।*
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एकु न दैबको दोऊ।। (पृष्ठ–48) [*CBSE (Outside), 2008*]

शब्दार्थ–***धूत***—त्यागा हुआ। ***अवधूत***—संन्यासी। ***रजपूतु***—राजपूत। ***जोलहा***—जुलाहा। ***कोऊ***—कोई। ***काहू की***—किसी की। ***ब्याहब***—ब्याह करना है। ***बिगार***—बिगाड़ना। ***सरनाम***—प्रसिद्ध। ***गुलामु***—दास। ***जाको***—जिसे। ***रुचै***—अच्छा लगे। ***ओऊ***—और। ***खैबो***—खाऊँगा। ***मसीत***—मसजिद। ***सोइबो***—सोऊँगा। ***लैबो***—लेना। ***दैब***—देना। ***दोऊ***—दोनों।

प्रसंग–प्रस्तुत कवित्त हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित '**कवितावली**' के '**उत्तरकांड**' से उद्धृत है। इसके रचयिता **तुलसीदास** हैं। इस कवित्त में कवि ने तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक दुरावस्था का यथार्थपरक चित्रण किया है।

व्याख्या–कवि समाज में व्याप्त जातिवाद और धर्म का खंडन करते हुए कहता है कि वह श्रीराम का भक्त है। कवि आगे कहता है कि समाज हमें चाहे धूर्त कहे या पाखंडी, संन्यासी कहे या राजपूत अथवा जुलाहा कहे, मुझे इन सबसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मुझे अपनी जाति या नाम की कोई चिंता नहीं है क्योंकि मुझे किसी के बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना और न ही किसी की जाति बिगाड़ने का शौक है। तुलसीदास का कहना है कि मैं राम का गुलाम हूँ, उसमें पूर्णत: समर्पित हूँ, अत: जिसे मेरे बारे में जो अच्छा लगे, वह कह सकता है। मैं माँगकर खा सकता हूँ, मस्जिद में सो सकता हूँ तथा मुझे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। संक्षेप में कवि का समाज से कोई संबंध नहीं है। वह राम का समर्पित भक्त है।

विशेष– (*i*) कवि समाज के आक्षेपों से दुखी है। उसने अपनी रामभक्ति को स्पष्ट किया है।
(*ii*) दास्यभक्ति का भाव चित्रित है।
(*iii*) 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' मुहावरे का सशक्त प्रयोग है।
(*iv*) सवैया छंद है।
(*v*) ब्रजभाषा है।
(*vi*) मस्जिद में सोने की बात करके कवि ने उदारता और समरसता का परिचय दिया है।
(*vii*) निम्नलिखित में अनुप्रास अलंकार की छटा है–
'कहौ कोऊ', 'काहू की', 'कहै कछु'।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *कवि किन पर व्यंग्य करता है और क्यों?*
(ख) *कवि अपने किस रूप पर गर्व करता है?*
(ग) *कवि अपना जीवन-निर्वाह किस प्रकार करना चाहता है?*

उत्तर (क) कवि धर्म, जाति, संप्रदाय के नाम पर राजनीति करने वाले ठेकेदारों पर व्यंग्य करता है, क्योंकि समाज के इन ठेकेदारों के व्यवहार से ऊँच-नीच, जाति-पाँति आदि के द्वारा समाज की सामाजिक समरसता कहीं खो गई है।
(ख) कवि स्वयं को रामभक्त कहने में गर्व का अनुभव करता है। वह स्वयं को उनका गुलाम कहता है तथा समाज की हँसी का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(ग) कवि भिक्षावृत्ति से अपना जीवनयापन करना चाहता है। वह मस्जिद में निश्चिंत होकर सोता है। उसे किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। वह अपने सभी कार्यों के लिए अपने आराध्य श्रीराम पर आश्रित है।

निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. *किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,*
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।
'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।

प्रश्न (क) *इन काव्य-पंक्तियों का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*
(ख) *पेट की आग को कैसे शांत किया जा सकता है?*
(ग) *काव्यांश के भाषिक सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।* [*CBSE Sample Paper, 2015*]

उत्तर (क) इस समाज में जितने भी प्रकार के काम हैं, वे सभी पेट की आग से वशीभूत होकर किए जाते हैं। 'पेट की आग' विवेक नष्ट करने वाली है। ईश्वर की कृपा के अतिरिक्त कोई इस पर नियंत्रण नहीं पा सकता।

(ख) पेट की आग भगवान राम की कृपा के बिना नहीं बुझ सकती। अर्थात राम की कृपा ही वह जल है, जिससे इस आग का शमन हो सकता है।

(ग) • पेट की आग बुझाने के लिए मनुष्य द्वारा किए जाने वाले कार्यों का प्रभावपूर्ण वर्णन है।
• काव्यांश कवित्त छंद में रचित है।
• ब्रजभाषा का माधुर्य घनीभूत है।
• 'राम घनश्याम' में रूपक अलंकार है।
• 'किसबी किसान-कुल', 'चाकर चपल', 'बेचत बेटा-बेटकी' आदि में अनुप्रास अलंकार की छटा दर्शनीय है।

2. *खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,*
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहैं एक एकन सों 'कहाँ जाई, क्या करी?'

बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबैं पै, राम! रावरें कृपा करी।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु!
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।।

प्रश्न (क) *किसान, व्यापारी, भिखारी और चाकर किस बात से परेशान हैं?*
(ख) *बेदहूँ पुरान कही ..... कृपा करी'–इस पंक्ति का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*
(ग) *कवि ने दरिद्रता को किसके समान बताया है और क्यों?*

उत्तर (क) किसान को खेती के अवसर नहीं मिलते, व्यापारी के पास व्यापार की कमी है, भिखारी को भीख नहीं मिलती और नौकर को नौकरी नहीं मिलती। सभी को खाने के लाले पड़े हैं। पेट की आग बुझाने के लिए सभी परेशान हैं।

(ख) वेद-पुराण में भी यही लिखा है और संसार में यही देखा गया है कि भगवान श्रीराम की कृपा-दृष्टि पड़ने पर ही दरिद्रता दूर होती है।

(ग) कवि ने दरिद्रता को दस मुख वाले रावण के समान बताया है क्योंकि वह भी रावण की तरह समाज के हर वर्ग को प्रभावित करते हुए अपना अत्याचार-चक्र चला रही है।

1. *'कवितावली' में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है।*

[CBSE 2011 (C)]

अथवा

तुलसीदास के कवित्त के आधार पर तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालिए।

[CBSE (Delhi), 2015, Set-III]

उत्तर 'कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोज़गारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोज़गारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।

2. *पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है–तुलसी का यह काव्य-सत्य क्या इस समय का भी युग-सत्य है ? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।*

उत्तर पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है–तुलसी का यह काव्य-सत्य कुछ हद तक इस समय का भी युग-सत्य हो सकता है किंतु यदि आज व्यक्ति निष्ठा भाव, मेहनत से काम करे तो उसकी सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है। निष्ठा और पुरुषार्थ–दोनों मिलकर ही मनुष्य के पेट की आग का शमन कर सकते हैं। दोनों में एक भी पक्ष असंतुलित होने पर वांछित फल नहीं मिलता। अत: पुरुषार्थ की महत्ता हर युग में रही है और आगे भी रहेगी।

3. *तुलसी ने यह कहने की ज़रूरत क्यों समझी ?*

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूतु कहौ जोलहा कहौ कोऊ
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।
इस सवैया में 'काहू के बेटासों बेटी न ब्याहब' कहते तो सामाजिक अर्थ में क्या परिवर्तन आता ?

उत्तर तुलसीदास के युग में जाति संबंधी नियम अत्यधिक कठोर हो गए थे। तुलसी के संबंध में भी समाज ने उनके कुल व जाति पर प्रश्नचिह्न लगाए थे। कवि भक्त था तथा उसे सांसारिक संबंधों में कोई रुचि नहीं थी। वह कहता है कि उसे अपने बेटे का विवाह किसी की बेटी से नहीं करना। इससे किसी की जाति खराब नहीं होगी क्योंकि लड़की वाला अपनी जाति के वर ढूँढ़ता है। पुरुष-प्रधान समाज में लड़की की जाति विवाह के बाद बदल जाती है। तुलसी इस सवैये में अगर अपनी बेटी की शादी की बात करते तो संदर्भ में बहुत अंतर आ जाता। इससे तुलसी के परिवार की जाति खराब हो जाती। दूसरे, समाज में लड़की का विवाह न करना गलत समझा जाता है। तीसरे, तुलसी बिना जाँच के अपनी लड़की की शादी करते तो समाज में जाति-प्रथा पर कठोर आघात होता। इससे सामाजिक संघर्ष भी बढ़ सकता था।

4. *धूत कहौ ..... वाले छंद में ऊपर से सरल व निरीह दिखाई पड़ने वाले तुलसी की भीतरी असलियत एक स्वाभिमानी भक्त हृदय की है। इससे आप कहाँ तक सहमत हैं?*

अथवा

'धूत कहौ ..... ' छंद के आधार पर तुलसीदास के भक्त-हृदय की विशेषता पर टिप्पणी कीजिए।

[CBSE (Delhi), 2014]

उत्तर तुलसीदास ने इस छंद में अपने स्वाभिमान को व्यक्त किया है। वे सच्चे रामभक्त हैं तथा उन्हीं के प्रति समर्पित हैं। उन्होंने किसी भी कीमत पर अपना स्वाभिमान कम नहीं होने दिया और एकनिष्ठ भाव से राम की अराधना की। समाज के कटाक्षों का उन पर कोई प्रभाव नहीं है। उनका यह कहना कि उन्हें किसी के साथ कोई वैवाहिक संबंध स्थापित नहीं करना, समाज के मुँह पर तमाचा है। वे किसी के आश्रय में भी नहीं रहते। वे भिक्षावृत्ति से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं तथा मस्जिद में जाकर सो जाते हैं। वे किसी की परवाह नहीं करते तथा किसी से लेने-देने का व्यवहार नहीं रखते। वे बाहर से सीधे हैं, परंतु हृदय में स्वाभिमानी भाव को छिपाए हुए हैं।

स्वयं करें

1. आप कवि तुलसीदास के नारी संबंधी सामाजिक दृष्टिकोण को वर्तमान में कितना प्रासंगिक समझते हैं ? लिखिए।
2. 'मिलइ न जगत सहोदर भ्राता'–यदि लोगों द्वारा इसे अपने जीवन में उतार लिया जाए तो सामाजिक समरसता पर क्या असर पड़ेगा ?
3. तुलसी के समय में आर्थिक विषमता का बोलबाला था–कवितावली (उत्तरकांड से) के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. तुलसीदास ने वेद-पुराण के किस कथन की ओर संकेत किया है और क्यों ?
5. 'राम-लक्ष्मण का परस्पर प्रेम भ्रातृ-प्रेम का अनूठा उदाहरण है।' इस कथन की पुष्टि उदाहरण सहित कीजिए।
6. निम्नलिखित काव्यांशों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

   (अ) जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।
   अस मम जिवन बंधु बिन तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही॥

   (क) *काव्यांश के भाव-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।*

   (ख) *काव्यांश की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।*

   (ग) *इन पंक्तियों की अलंकार-योजना पर प्रकाश डालिए।*

   (ब) सुनि दसकंधर बचन तब, कुंभकरन बिलखान।
   जगदंबा हरि आनि अब, सठ चाहत कल्याण॥

   (क) *भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।*

   (ख) *अलंकार-योजना पर प्रकाश डालिए।*

   (ग) *काव्यांश के भाषिक सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।*